खाद्य महोत्सव

FOOD FUNCHAYAT

देशज खाद्यान्न के संरक्षण हेतु पहल

MISEREOR
IHR HILFSWERK

cecoedecon

खाद्य महोत्सव - संक्षिप्त अवधारणा पत्र

पिछले कुछ वर्षो में हमारी भोजन की थाली में बहुत कुछ बदलाव आया है। हमारी बदलती जीवनशैली, उससे बदली जलवायु व बाजार इस बदलाव के महत्वपूर्ण घटक रहे हैं। ये तीनों ही घटक हमारी खाद्य सुरक्षा व खाद्य सम्प्रभुता को प्रभावित कर रहे हैं। किसान कौन–सी फसल बोएगा, किस प्रकार के बीज का प्रयोग करेगा और उसका क्या मूल्य उसे मिलेगा, ये सब पूरी तरह से किसान के हाथ से निकलकर बाजार के नियंत्रण में चला गया है। विश्व की 10 बड़ी कम्पनियां आज 76 प्रतिशत से अधिक बीज बाजार पर अपना कब्जा जमाए बैठी है। केवल मोंन्सेंटो, पायोनीर व सीजण्टा जैसी कम्पनियां 53 प्रतिशत बीज बाजार को नियंत्रित करती है। बीज कम्पनियों का प्रलोभन किसान पर इतना हावी है कि वह अपने देशी बीजों की तमाम गुणवत्ता के बावजूद कम्पनियों के बीज खरीदने को मजबूर हो गया है। परिणामस्वरूप परम्परागत देशी बीज बाजार से लुप्त हो जा रहा है, जिसकी पोषणीय गुणवत्ता हमारे बुजुर्ग बताते आए हैं।

इसी बाजार नियंत्रित व्यवस्था का एक अन्य खतरा हम जीएम फूड के रूप में देख रहे हैं, जिसके तहत् बीजों के मौलिक स्वरूप में बदलाव कर अधिक उत्पादन के नाम पर जेनेटिकली मॉडिफाइड बीजों को बाजार में लाने की तैयारी हो रही है, जबकि अभी तक पूरी तरह यह साबित नहीं हो पाया है कि ये बीज स्वास्थ्य व पर्यावरण के लिए पूरी तरह सुरक्षित है। बाजार की इस दौड़ में हम लगातार परम्परागत व स्थानीय खाद्यान्न व बीजों को पीछे छोडते जा रहे हैं। स्थानीय जलवायु व पर्यावरण के अनुरूप प्रत्येक भौगोलिक क्षेत्र में प्रकृति प्रदत्त खाद्य पदार्थ मनुष्यों को मिलते आए हैं। राजस्थान में बाजरे का खींचड़ा, बेजड़ की रोटी, राबड़ी, कैर–सांगरी, जंगल–जलेबी, घूघरी, कमल गट्टा, सांवा, ढ़कनी–गोखरू, हिंगोटी, गडूल आदि कई सामग्रियां हमारे भौगोलिक परिस्थितियों व जलवायु के अनुरूप भोजन की थाली का हिस्सा रही है। मगर अब यह खाद्य सामग्रियां धीरे–धीरे सिमटती जा रही है।

आज सम्पूर्ण विश्व के समक्ष दो प्रमुख चुनौतियां हैं–एक जलवायु परिवर्तन व दूसरी कुपोषण। इन दोनों समस्याओं के समाधान के सूत्र हमें हमारी परम्परा में ही दिखाई पड़ते हैं। जैविक खेती या बिना रासायनिक तत्वों के की गई खेती को आज जलवायु परिवर्तन के अनुकूलन के लिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है, वहीं हमारे परम्परागत व देशी बीजों से उत्पन्न खाद्यान्न के उपयोग को कुपोषण कम करने की दिशा में कारगर माना जा रहा है।

वस्तुतः आज इस बात की महत्ती आवश्यकता है कि परम्परागत बीजों, खाद्यान्नों को संरक्षित करने हेतु लोगों, किसानों, सरकारों व जनप्रतिनिधियों को जागरूक किया जाए ताकि लोक जीवन व लोक रीतियों में उपलब्ध यह अमूल्य ज्ञानरूपी निधि आने वाली पीढ़ियों को पोषित करती रहे।

फूड फंचायत (खाद्य महोत्सव)-देशज खाद्यान्न के संरक्षण हेतु पहल

सिकोईडिकोन, बियाँड कॉपनहेगन व किसान सेवा समिति द्वारा संयुक्त रूप से ऑक्सफेम के सहयोग से 24 दिसम्बर, 2015 को जयपुर स्थित शिलकी डूंगरी गॉव में खाद्य महोत्सव ''फूड फंचायत'' का आयोजन किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य कृषि कार्य से जुड़े किसानों, जन–संगठनों व स्वयंसेवी संस्थाओं के लिए स्थानीय खाद्यान्न को बढ़ावा देने हेतु एक ऐसा मंच तैयार करना था, जिसके माध्यम से किसान समुदाय एक–दूसरे से देशज़ खेती व खाद्यान्न संबंधी जानकारियां, पद्धतियों, बाजार की संभावनाएं, बीजों के संरक्षण जैसे विषयों पर संवाद स्थापित करें व प्रदर्शन के माध्यम से आपस में जुड़ाव हो व विचारों और स्थानीय संस्कृति का आदान–प्रदान हो।

इस कार्यक्रम में राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र के किसानों व जन संगठना के 300 से अधिक प्रतिनिधियों ने भागीदारी की।

इस कार्यक्रम को फूड फंचायत कहा गया, जिसमें स्थानीय खाद्यान्न का प्रदर्शन (फूड) , सांस्कृतिक मनोरंजन (फन) व खेती किसानी से जुड़े मुद्दों पर विचार – विमर्श (पंचायत) हुआ ।

प्रकृति की पूजा–अर्चना

अन्नपूर्णा देवी की पूजा–अर्चना करते हुए किसान

प्रकृति की पूजा–अर्चना

स्थानीय परम्परागत सांस्कृतिक महत्व को दृष्टिगत रखते हुए कार्यक्रम में भागीदार महिलाओं ने मंगल गीत गाते हुए कल्प वृक्ष की पूजा की और समस्त जीव–जन्तुओं के कल्याण की कामना की।

विभिन्न प्रदेशों से आए किसान भाइयों व संगठनों द्वारा प्रदर्शन हेतु लाई गई स्थानीय खाद्यान्न सामग्री व बीजों की प्रदर्शनी से पूर्व अन्नपूर्णा देवी की स्थानीय विधि–विधान से पूजा की गई जिसमें सभी राज्यों के किसान व विभिन्न समुदायों के प्रतिनिधियों ने सामूहिक रूप से भाग लिया व प्रार्थना की।

स्थानीय खाद्यान्न व बीजों का प्रदर्शन

देश के विभिन्न राज्यों से आए किसानों व जन संगठनों द्वारा स्थानीय खाद्यान्न सामग्री तैयार की गई। स्थानीय खाद्यान्न को बनाने हेतु काम में लाई जाने वाली सामग्री का भी प्रदर्शन किया गया। किसानों द्वारा 100 से अधिक देशी बीजों की किस्मों का प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शनी का अवलोकन करने आए लोगों ने स्थानीय खाद्यान्न का लुत्फ़ लिया और उनसे जुड़ी जानकारी भी ली साथ ही देशी बीजों की खरीद भी की।

विचार–मंथन

फूड फंचायत में ''रोज़ी–रोटी और बाजार'' विषय पर किसान संगठनों की पंचायत (संगोष्ठी) भी आयोजित हुई, जिसमें खाद्य संप्रभुता, आजीविका व बाजार केंद्रित व्यवस्था पर गंभीरतापूर्व विचार–विमर्श हुआ। रोहतक विश्वविद्यालय के प्रोफेसर व प्रसिद्ध अर्थवेत्ता डॉ. राजेन्द्र सिंह ने अपने मुख्य उद्‌बोधन में अधिक से अधिक जैविक खेती को बढ़ावा देने की बात कहते हुए स्थानीय खाद्यान्न की पोषणीय–गुणवत्ता के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि किसानों की खाद्यान्न संप्रभुता को बरकरार रखने के लिए जरूरी है कि बीज़–व्यापार से जुड़ी विदेशी कम्पनियों के प्रलोभनों से किसानों को बचाया जाए व स्थानीय देशी बीजों की अच्छी किस्म के आदान–प्रदान की संस्कृति को बढ़ावा दिया जाए। जेनेटिकली मॉडिफाइड बीजों पर भी सरकार को जल्दबाजी में निर्णय नहीं लेने पर जोर दिया। इस संवाद में साझा मंच के संयोजक श्री अशोक माथुर, सिकोईडिकोन के कार्यकारी निदेशक श्री मनीष सिंह ने भी छोटे व सीमांत किसानों की खाद्य सुरक्षा व आजीविका के खतरों पर प्रकाश डाला। संस्था के अध्यक्ष जस्टिस विनोद शंकर दवे ने फूड फंचायत को स्थानीय देशज ज्ञान के सरंक्षण हेतु महत्वपूर्ण पहल बताते हुए इस प्रकार के के आयोजन प्रतिवर्ष किए जाने का सुझाव दिया।

मीडिया से वार्ता

इस आयोजन के तहत स्थानीय खाद्यान्न व पोषण पर मीडिया से चर्चा की गई। चर्चा में सिकोईडिकोन के कार्यकारी निदेशक श्री मनीष सिंह ने फूड फंचायत के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि कुपोषण देश के समक्ष गंभीर चुनौतियों में से एक है और यदि हम स्थानीय भौगोलिक स्थितियों व जलवायु के अनुरूप देशज़ खाद्यान्न को बढ़ावा देते हैं तो यह समस्या काफी हद तक कम की जा सकती है। उन्होंने बताया कि किसानों की आजीविका व खाद्य सुरक्षा बाजार केंद्रित व्यवस्था से प्रभावित हो रही है, जिसकी वजह से खेती की लागत बढ़ती जा रही है और मुनाफा घटता जा रहा है। फूड फंचायत परम्परागत ज्ञान को आज के संदर्भों में पुनर्जीवित करने का माध्यम है।

सामूहिक भोजन – सामूहिक तैयारी के साथ

कार्यक्रम का एक वैशिष्ट्य यह रहा कि विभिन्न किसान संगठनों ने मिलकर भोजन सामग्री एकत्रित की और स्थानीय तरीके से पकाया भोजन, स्थानीय व्यंजनों के साथ सामूहिक रूप से किया गया। पुरूष व महिलाओं ने मिलकर भोजन सामग्री तैयार की और भोजन व्यवस्था संचालित की।

सामूहिक भागीदारी से खाद्य महोत्सव बना यादगार

कार्यक्रम में भाग लेने आए सभी किसान भाइयों व जनसंगठनों ने सामूहिक रूप से पूरे कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी की और अपने मैत्रीपूर्ण स्नेह से इस सांस्कृतिक खाद्यान्न संगम को अविस्मरणीय बना दिया।

मौसम सम्बन्धी कहावतें

चैत मास दसमी बदी जो कहुँ कोरी जाय।
चौ मासे भर बादला भली भात बरसाय।
यदि चैत माह कृष्ण पक्ष की दसवीं को पानी नहीं बरसता तो वर्षा ऋतु में चारों महीने अच्छी वर्षा होती है।

जेठ माह जो बरखी पानी।
तपी न धरती घटी किसानी।
यदि जेठ के महीने में पानी बरसता है तो जमीन में तपन नहीं होती फलस्वरूप खरीफ की फसल अच्छी नहीं होती।

जो आषाढ़ के पूनू बादर घेरे चन्द।
गाबा भइया गीत तू घर–घर होय आनंद।।
यदि आषाढ़ की पूर्णमासी को चन्द्रमा बादलों में छिपा रहे तो आप आनंद का गीत गाइये, क्योंकि वर्षा अच्छी होगी फलस्वरूप अनाज की फसल घर–घर खुशहाली लाएगी।

बालें छोटी काहें ? बिना आषाढ़ के बाहे।
तुम्हारे खेत की बाली छोटी क्यों है? इसलिए कि आषाढ़ में खेती की जुताई नहीं की गई थी।

सामन सांमा अगहन जाबा, वतनै काटै जैतने बोया।
यदि सावन में महिने में सांवा और अगहन के महीने में जौ बोया जाय तो उतनी ही पैदावार होती है जितना बोया जाता है क्योंकि सांवा शुरू आषाढ़ और जौ कार्तिक में बोना चाहिए।

सामन भादौं खेती निदावै।
वा किसान निकहा धन पावै।।
जो किसान सावन और भादों के महिने में अपने खेतों की निंदाई करता है उसकी फसल अच्छी होती है फलस्वरूप उसे अच्छी आमदनी होती है।

माघ सुदी आठै घन गरजै। तो महिना भर पानी बरखै।।
माघ शुक्ल अष्टमी को यदि मेघ गर्जन करे तो समझ लेना चाहिए कि निरन्तर एक माह पानी गिरेगा।

उख कंदानी काहे।
स्वाती पानी पाये।
गन्ने की फसल इतनी अच्छी क्यों हुई? क्योंकि स्वाती नक्षत्र में उसकी एक बार सिंचाई की गई है।

माघ मे गरमी जेठ म जाड़ा।
कहे घाघा हम होव उजाड़ा।।
यदि माघ में गर्मी और जेठ में ठंड़क रहे तो घाघ का कथन है कि इस वर्ष हमारी फसल सूख जायेगी।

पहिये खेत न डारे गोबर।
अब सेतै और मउते थोमर।।
पहले खेत में तुमने गोबर की खाद नहीं दी अब पश्चाताप से क्या लाभ जब फसल कमजोर हुई।

गाजरसकला मूरी।
तीनौ बोबै दूरी।।
गाजर, शकरकंद और मूली इन तीनों को दूर–दूर बोया जाय तब अधिक लाभ मिलता है।

जेखे खेत परा नहि गोबर।
वा किसान का मानै दूवर।।
जिस किसान के खेत में गोबर की खाद नहीं पड़ी उसे कमजोर किसान समझना चाहिए।

हरिन फलांगन काकरी पैगे पैग कपास।
जाय के कहा किसान से बोबै धनी उखास।।
ककड़ी खीरा उतनी दूर पर बोना चाहिए जितनी हिरण की एक छलांग होती है। और कपास आदमी के पग के बराबर दूर में, पर किसान को समझा दो कि वह गन्ने की फसल पास–पास लगाये।

तरे ओद ऊपर बदराई।
तब गोहूं मां गेरूआ धाई।।
जब नीचे जमीन गीली हो और ऊपर बादल हो तब गेहूं की फसल में गेरूआ रोग लगता है।

सामां कुटकी लोक जियामें।
तीन पाख मा पक के आमें।।
सांवा कुटकी सब को जीवित रखने वाले अन्न हैं क्योंकि ये तीन पखवाड़े में ही पक कर आ जाते हैं।

चना सींच मा जबहिन आबै।
ओके पहिले तुरत खोंटाबै।।
चना जैसे ही सिंचाई करने लायक हो उसके पहले उसके तने की खोटाई करा देनी चाहिए।

जब शैल खटा खटा बाजै।
तब चना खूब मन गाजै।।
जब खेत जोतते समय रूखा हो जाय और जुए के शैलों से जुताई करते समय खट खट की आवाज निकले तब समझना चाहिए कि चने की पैदावार अच्छी होगी।

गोहूं जबा क पांच पसेर।
मटर क बीघा तीसक सेर।।
गेहूं और जौ एक बीघा में पांच पसेरी और मटर की तीस सेर बोना चाहिए।

पोर काट के तुरत दबावै।
तबहिन ऊख बहुत सुख पावै।।
गन्ने की गांठ को काट कर तुरंत गीली मिट्टी में दबा देना चाहिए तभी उसमें अच्छा अंकुरण होता है।

गहिर न जोतैं बोवे धान।
तउनै कुठुला भरी किसान।।
जो किसान खेत में धान बोना चाहे उसे गहरी जुताई नहीं करनी चाहिए तभी धान की पैदावार होगी क्योंकि गहरी जुताई से धान की पैदावार ठीक से नहीं होती।

तीन पाख दुइपानी।
पकि आई कुटुक रानी।।
यदि ड़ेढ माह के बीच में दो बार भी पानी गिर जाय तब भी कुटकी का पौधा तैयार हो जाता है और उसके दाने पक जाते है।

पग पग माही बाजरा दादुर कुदनी ज्वार।
बाजरा का बीज आदमी के एक पग के बराबर दूरी में और ज्वार इतनी दूर पर बोना चाहिये जितना मेंढ़क एक बार में छलांग लगा लेता है।

आये फूल न बरखा पानी।
धान मरा अधबीच जवानी।।
यदि धान में फूल आते समय पानी नहीं बरसता तो धान की फसल आधी जवान में ही नष्ट हो जाती है।

बीज की व्यथा

मेरी व्यथा समझो
मैं जैसा हूँ, वैसा ही रहने दो

मुझे प्रयोग शालाओं में नहीं
किसान की कोटडी में रहने दो
मैं जैसा हूँ, वैसा ही रहने दो

प्रकृति ने सबको सहज गति दी है, बढने की
मुझे भी अपनी लय में बढने दो
मैं जैसा हूँ, वैसा ही रहने दो

मत भूलों तुम भी तो बीज ही थे
सोचो, स्वरूप बदलकर मेरा क्या पाओगे
मैं जैसा हूँ, वैसा ही रहने दो

प्रकाशन वर्ष : फरवरी, 2024

प्रकाशक : सिकोईडिकोन
एफ–159–160, सीतापुरा औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर– 302022

फोन : 91-141-2771455
फैक्स : 91-141-2770330
ईमेल : cecoedecon@gmail.com
Website : www.cecoedecon.org.in

सिकोईडिकोन

सिकोईडिकोन (सेंटर फॉर कम्युनिटी इकोनॉमिक्स एण्ड डेवलपमेंट कंसलटैंट्स सोसायटी) भारत की एक अग्रणी गैर सरकारी संस्था है, जिसे संयुक्त राष्ट्र में विशेष सलाहकार का दर्जा प्राप्त है। ''समतामूलक समाज निर्माण'' के मूल मंत्र के साथ वर्ष 1981 में संस्था का प्रारम्भ हुआ। विगत अनेक वर्षों से समाज के वंचित और निर्धन वर्ग की क्षमता वर्धन में कार्यरत सिकोईडिकोन इस शोषित एवं वंचित वर्ग को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाने के लिए वचनबद्ध है।

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न संवेदनशील विषयों पर गंभीर विचार–विमर्श एवं एक व्यवस्थित तंत्र निर्माण की प्रक्रिया के माध्यम से सिकोईडिकोन निरंतर अपने लक्ष्य प्रप्ति की ओर अग्रसर है। लक्षित समुदायों के समर्थन में, विभिन्न अभियानों के माध्यम से नीतिगत मामलों को, अपने शोध एवं विचारों से प्रभावित कर उन्हें असरदार रूप में समाजोन्मुखी, विशेषकर निर्धन एवं वंचित लाभार्थियों के अनुकूल बनाने का प्रयास संस्था के प्रमुख लक्ष्यों में एक है।

सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ लोगों से प्रत्यक्ष संवाद सिकोईडिकोन की सामाजिक पहुँच / दायरे का मुख्य आधार है। सामाजिक दृष्टि से वंचित एवं उपेक्षित अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन जाति, महिलाएं, बाल श्रमिक, भूमिहीन, छोटे एवं सदा हाशिये पर धकेले गए किसान, मजदूर जिन्हें शिक्षा एवं स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाएं भी आसानी से उपलब्ध नहीं, उनसे सीधा संवाद स्थापित कर, उनकी आवाज़ को संस्था एक मंच प्रदान करती है। साथ ही जलवायु परिवर्तन और आनुवांशिक जैविक संशोधन के दृष्परिणामों से प्रभावित कृषक वर्ग तक पहुँच बनाकर खाद्य सम्प्रभुता में सकारात्मक बदलाव प्रक्रिया की पहल भी इसमें शामिल है। विभिन्न गैर सरकारी संस्थाओं, मीडिया एवं समाज के अन्यत हितधारकों के साथ भागीदारी एवं सशक्तिकरण से सिकोईडिकोन अपनी पहुँच को विस्तारित करने की दिशा में प्रयत्नशील है।

सेन्टर फॉर कम्यूनिटी इकोनोमिक्स एण्ड डेवलपमेंट कन्सलटैंट्स सोसायटी

स्वराज परिसर, एफ–159–160, औद्योगिक व संस्थागत क्षेत्र, सीतापुरा, जयपुर–302022 (राज.)
फोन: 91–7414038811/22,141–2771855, फैक्स: 91–141–2770330
ई–मेल : cecoedecon@gmail.com, visit us at http:www.cecoedecon.org.in